

# हिंदी

कक्षा IX

## अध्याय 1- दुःख का अधिकार

### मौखिक

#### निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

**प्रश्न 1. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?**

**उत्तर-** किसी व्यक्ति की पोशाक देखकर हमें उसका दर्जा तथा उसके अधिकारों का ज्ञान होता है।

**प्रश्न 2. खरबूजे बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूजे क्यों नहीं खरीद रहा था?**

**उत्तर-** खरबूजे बेचने वाली अपने पुत्र की मौत का एक दिन बीते बिना खरबूजे बेचने आई थी। सूतक वाले घर के खरबूजे खाने से लोगों का अपना धर्म भ्रष्ट होने का भय सता रहा था, इसलिए उससे कोई खरबूजे नहीं खरीद रहा था।

**प्रश्न 3. उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?**

**उत्तर-** उस स्त्री को फुटपाथ पर रोता देखकर लेखक के मन में व्यथा उठी। वह उसके दुःख को जानने के लिए बेचैन हो उठा।

**प्रश्न 4. उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था?**

**उत्तर-** उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण था-साँप द्वारा डँस लिया जाना। वह मुंह-अँधेरे खेत में खरबूजे तोड़ रहा था। उसी समय उसका पैर एक साँप पर पड़ गया था।

**प्रश्न 5. बुढ़िया को कोई भी क्यों उधार नहीं देता?**

**उत्तर-** स्त्री का कमाऊ बेटा मर चुका था। अतः पैसे वापस न मिलने की आशंका के कारण कोई उसे इकतरी-दुअत्री भी उधार नहीं देता।

### लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

**प्रश्न 1. मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्त्व है?**

**उत्तर-** मनुष्य के जीवन में पोशाक का बहुत महत्त्व है। पोशाक ही मनुष्य की सामाजिक और आर्थिक स्थिति दर्शाती है। पोशाक ही मनुष्य को मनुष्य में भेद करती है। पोशाक ही उसे आदर का पात्र बनाती है तथा नीचे झुकने से रोकती है।

**प्रश्न 2. पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?**

**उत्तर-** जब हम अपने से कम हैसियत रखने वाले मनुष्य के साथ बात करते हैं तो हमारी पोशाक हमें ऐसा नहीं करने देती। हम स्वयं को बड़ा मान बैठते हैं और सामने वाले को छोटा मानकर उसके साथ बैठने तथा बात करने में संकोच अनुभव करते हैं।

**प्रश्न 3. लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?**

**उत्तर-** लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नहीं जान पाया क्योंकि रोती हुई स्त्री को देखकर लेखक के मन में एक व्यथा उठी पर अपनी अच्छी और उच्चकोटि की पोशाक के कारण फुटपाथ पर नहीं बैठ सकता था।

**प्रश्न 4. भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?**

**उत्तर-** भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन पर हरी तरकारियाँ तथा खरबूजे उगाया करता था। वह रोज ही उन्हें सब्जी मंडी या फुटपाथ पर बैठकर बेचा करता था। इस प्रकार वह कछिआरी करके अपने परिवार का निर्वाह करता था।

**प्रश्न 5. लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी?**

**उत्तर-** लड़के की मृत्यु के दिन ही खरबूजे बेचने जाना बुढ़िया की घोर विवशता थी। साँप के हँसे लड़के की झाड़-फेंक कराने, नाग देवता की पूजा और मृत्यु के बाद अंत्येष्टि करने में हुए खर्च के कारण उसके घर में अनाज का दाना भी न बचा था।

**प्रश्न 6. बुढ़िया के दुख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?**

**उत्तर-**लेखक ने बुढ़िया के पुत्र शोक को देखा। उसने अनुभव किया कि इसे बेचारी के पास रोने-धोने का भी समय और अधिकार नहीं है। तभी उसकी तुलना में उसे अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद आ गई। वह महिला पुत्र शोक में ढाई महीने तक पलंग पर पड़ी रही थी।

**(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-**

**प्रश्न 1. बाज़ार के लोग खरबूजे बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।**

**उत्तर-**बाजार के लोग खरबूजे बेचने वाली महिला के बारे में तरह-तरह की बातें कहते हुए ताने दे रहे थे और धिक्कार रहे थे। उनमें से कोई कह रहा था कि बुढ़िया कितनी बेहया है जो अपने बेटे के मरने के दिन ही खरबूजे बेचने चली आई। दूसरे सज्जन कह रहे थे कि जैसी नीयत होती है अल्लाह वैसी ही बरकत देता है। सामने फुटपाथ पर दियासलाई से कान खुजलाते हुए एक आदमी कह रहा था, “अरे इन लोगों का क्या है ? ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी खसम-लुगाई, ईमान-धर्म सब रोटी का टुकड़ा है।

**प्रश्न 2. पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?**

**उत्तर-**पास पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को पता चला कि बुढ़िया का एक जवान पुत्र था—भगवाना। वह तेईस साल का था। वह शहर के पास डेढ़ बीघे जमीन पर सब्जियाँ उगाकर बेचा करता था। एक दिन पहले सुबह-सवेरे वह पके हुए खरबूजे तोड़ रहा था कि उसका पैर एक साँप पर पड़ गया। साँप ने उसे डस लिया, जिससे उसकी मौत हो गई। उसके मरने के बाद घर का गुजारा करने वाला कोई नहीं था। अतः मज़बूरी में उसे अगले ही दिन खरबूजे बेचने के लिए बाज़ार में बैठना पड़ा।

**प्रश्न 3. लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?**

**उत्तर-**लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया ने वह सब उपाय किए जो उसकी सामर्थ्य में थे। साँप का विष उतारने के लिए झाड़ फेंक करने वाले ओझा को बुला लाई ओझा ने झाड़-फेंक की। नागदेवता की पूजा की गई और घर का आटा और अनाज दान-दक्षिणा के रूप में दे दिया गया। उसने अपने बेटे के पैर पकड़कर विलाप किया, पर विष के प्रभाव से शरीर काला पड़ गया और वह मृत्यु को प्राप्त कर गया।

### प्रश्न 4. लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाज़ा कैसे लगाया?

**उत्तर-**लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाज़ा लगाने के लिए अपने पड़ोस में रहने वाली एक संभ्रांत महिला को याद किया। उस महिला का पुत्र पिछले वर्ष चल बसा था। तब वह महिला ढाई मास तक पलंग पर पड़ी रही थी। उसे अपने पुत्र की याद में मूर्छा आ जाती थी। वह हर पंद्रह मिनट बाद मूर्छित हो जाती थी। दो-दो डॉक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहा करते थे। उसके माथे पर हमेशा बर्फ की पट्टी रखी रहती थी। पुत्र शोक मनाने के सिवाय उसे कोई होश-हवास नहीं था, न ही कोई जिम्मेवारी थी। उस महिला के दुःख की तुलना करते हुए उसे अंदाज़ा हुआ कि इस गरीब बुढ़िया का दुःख भी कितना बड़ा होगा।

### प्रश्न 5. इस पाठ का शीर्षक 'दुख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**दुख का अधिकार कहानी को पढ़कर ऐसा लगता है कि संभ्रांत व्यक्तियों का दुख ज्यादा भारी होता है। उन्हें दुख व्यक्त करने का अधिकार है। उनके दुख को देखकर आसपास के लोग भी दुखी ही नहीं होते हैं, बल्कि उनके प्रति सहानुभूति दर्शाते हैं। ठीक उसी प्रकार के दुख से जब कोई गरीब दुखी होता है तो लोग उसका उपहास ही नहीं उड़ाते हैं बल्कि उससे घृणा भी प्रकट करते हैं। वे तरह की बातें बनाकर उस पर कटाक्ष करते हैं, मानो गरीब को दुख मनाने का कोई अधिकार ही नहीं है। इस पाठ की पूरी कहानी इसी दुख के आसपास घूमती है अतः यह शीर्षक पूर्णतया सार्थक है।

### (ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

**प्रश्न 1. जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।**

**उत्तर-**लेखक कहना चाहता है कि हमारी पोशाक और हमारी हैसियत हमें नीचे गिरने और झुकने से रोकती है। जिस प्रकार हवा की लहरें पतंग को एकदम सीधे नीचे नहीं गिरने देतीं, बल्कि धीरे-धीरे गिरने की इजाजत देती हैं, ठीक उसी प्रकार हमारी पोशाक हमें अपने से नीची हैसियत वालों से एकदम मिलने-जुलने नहीं देती। हमें उनसे मिलने में संकोच होता है।

**प्रश्न 2. इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।**

**उत्तर-**आशय यह है कि भूखा आदमी कौन-सा पाप नहीं करता है अर्थात् वह हर पाप करने को तैयार रहता है। जिस विवश और लाचार व्यक्ति के पास घर में खाने के लिए एक दाना भी न हो, वह अपने सारे कर्म रोटी के इंतजाम के लिए करेगा। रोटी पा लेना ही उसकी प्राथमिकता होगी। इस प्राथमिकता के लिए वह हर तरह के कर्म करने को तैयार रहता है।

**प्रश्न 3. शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और ... दुखी होने का भी एक अधिकार होता है।**

**उत्तर-**लेखक संभ्रांत महिला और गरीब बुढ़िया-दोनों के दुःख मनाने के ढंग को देखकर सोचता है-दुःखे प्रकट करने के लिए और मृत्यु का शोक प्रकट करने के लिए भी मनुष्य को सुविधा होनी चाहिए। उसके पास इतना धन, साधन और समय होना चाहिए कि दुःख के दिनों में उसका काम चल जाए। डॉक्टर उसकी सेवा कर सकें। उस पर घर के बच्चों के भरण-पोषण की जिम्मेदारी न हो। आशय यह है कि गरीब लोग मजबूरी के कारण ठीक से शोक भी नहीं मना पाते। उनकी मजबूरियाँ उन्हें परिश्रम करने के लिए बाध्य कर देती हैं।

### भाषा-अध्ययन

**प्रश्न 1. निम्नांकित शब्द-समूहों को पढ़ो और समझो-**

(क) कद्घा, पतङ्ग, चञ्चल, ठण्डा, सम्बन्ध।

(ख) कंघा, पतंग, चंचल, ठंडा, संबंध।

(ग) अक्षुण्ण, सम्मिलित, दुअत्री, चवत्री, अन्न।

(घ) अँधेरा, बाँट, मुँह, ईंट, महिलाएँ, में, मैं।

ध्यान दो कि ङ्, , ण, न् और म् ये पाँचों पंचमाक्षर कहलाते हैं। इनके लिखने की विधियाँ तुमने ऊपर देखीं-इसी रूप में या अनुस्वार के रूप में। इन्हें दोनों में से किसी भी तरीके से लिखा जा सकता है और दोनों ही शुद्ध हैं। हाँ, एक पंचमाक्षर जब दो बार आए तो अनुस्वार का प्रयोग नहीं होगा; जैसे-अम्मा, अन्न आदि। इसी प्रकार इनके बाद यदि अंतस्थ य, र, ल, व और ऊष्म श, ष, स, ह आदि हों तो अनुस्वार का प्रयोग होगा, परंतु उसका उच्चारण पंचम वर्षों से किसी भी एक वर्ण की भाँति हो सकता है; जैसे-संशय, संरचना में 'न्', संवाद में 'म्' और संहार में (°) यह चिह्न है अनुस्वार का और (°) यह चिह्न है अनुनासिक का। इन्हें क्रमशः बिंदु और चंद्र-बिंदु भी कहते हैं। दोनों के प्रयोग और उच्चारण में अंतर है। अनुस्वार का प्रयोग व्यंजन के साथ होता है अनुनासिक का स्वर के साथ।

## अध्याय 1- दुःख का अधिकार

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए-

ईमान	.....
बदन	.....
अंदाज़ा	.....
बेचैनी	.....
गम	.....
दर्जा	.....
ज़मीन	.....
ज़माना	.....
बरकत	.....

उत्तर-

शब्द	पर्याय
ईमान	ईश्वर पर विश्वास, सच्चाई, धर्म
बदन	शरीर, तन, काया
अंदाज़ा	अनुमान
बेचैनी	अधीरता परेशानी
गम	दुख, शोक
दर्जा	श्रेणी, स्तर
ज़मीन	धरती, वसुधा
ज़माना	समय, युग
बरकत	समृद्धि, वृद्धि

प्रश्न 3. निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पाठ में आए शब्द-युग्मों को छाँटकर लिखिए-

उदाहरण : बेटा – बेटी

## अध्याय 1- दुःख का अधिकार

उत्तर-

शब्द	युग्म
फफक	— फफककर
खसम	— ईमान
धर्म	— ईमान
पास	— पड़ोस
पोता	— पोती
झाड़ना	— फूँकना
दान	— दक्षिणा
लिपट	— लिपटकर
छन्नी	— ककना
दुअन्नी	— चवन्नी
रोते	— रोते
पोंछते	— पोंछते
पंद्रह	— पंद्रह
चूनी	— भूसी

प्रश्न 4. पाठ के संदर्भ के अनुसार निम्नलिखित वाक्यांशों की व्याख्या कीजिए-

बंद दरवाजे खोल देना, निर्वाह करना, भूख से बिलबिलाना, कोई चारा न होना, शोक से द्रवित हो जाना।

**उत्तर-**बंद दरवाजे खोल देना- अच्छी और उत्तमकोटि की पोशाक देखकर लोग प्रभावित हो जाते हैं। इस प्रभाव में आकर वे ऐसी पोशाक धारण करने वालों के मुश्किल लगने वाले वे काम कर देते हैं, जो कठिन माने जाते हैं।

निर्वाह करना- बुढ़िया का बेटा भगवान डेढ़ बीघा जमीन पर सब्जियाँ उगाता था और उन्हें बेचकर अपना निर्वाह किया करता था।

भूख से बिलबिलाना- बुढ़िया के पोते-पोती जानते थे कि उनके पिता की मृत्यु हो गई है, पर भूख का दुख उनके लिए इससे भी बढ़कर था। वे भूख रोक न सके और बिलबिला उठे।

कोई चारा न हो- घर में अनाज का एक भी दाना न होने के कारण बुढ़िया के सामने कोई चारा नहीं रह गया था जिससे वह अपनी भूखी व बीमार बहू को कुछ दे सके। वह खरबूजे बेचने को विवश थी।



## अध्याय 1- दुःख का अधिकार

शोक से द्रवित होना- संवेदनशील व्यक्ति दूसरों को दुखी देखकर प्रसन्न नहीं हो सकता। वह दुखी व्यक्ति के दुख के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए शोक से द्रवित हो जाता है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्द-युग्मों और शब्द-समूहों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) छन्नी-ककना	अढ़ाई-मास	पास-पड़ोस
दुअन्नी-चवन्नी	मुँह-अँधेरे	झाड़ना-फूँकना
(ख) फफक-फफककर	बिलख-बिलखकर	
तड़प-तड़पकर	लिपट-लिपटकर	

उत्तर-

(क) छन्नी-ककना- पुराने जमाने में गरीब स्त्रियाँ ही छन्नी-ककनी पहनती थीं।

अढ़ाई मास- मक्के की यह प्रजाति अढ़ाई मास में तैयार हो जाती है।

पास-पड़ोस- व्यक्ति पर उसके पास-पड़ोस का असर अवश्य पड़ता है।

दुअन्नी-चवन्नी- कभी दुअन्नी-चवन्नी भी अपनी कीमत रखते थे, पर आज वे चलन में नहीं हैं।

मुँह अँधेरे- किसान मुँह अँधेरे खेत में चले जाते हैं।

झाड़ना-फेंकना- ओझा का झाड़ना-फेंकना भी भगवान के काम न आया।

(ख) फफक-फफककर- मेले में माँ-बाप से बिछड़ा बच्चा फफक-फफककर रो रहा था।

तड़प-तड़पकर- अंग्रेजी राज्य में कैदियों को तड़प-तड़पकर मरना पड़ता था।

बिलख-बिलखकर- बेटे के मरने की बात सुनकर माँ बिलख-बिलखकर रोने लगी।

लिपट-लिपटकर- भगवाना की पत्नी और बच्चे उससे लिपट-लिपटकर रो रहे थे।

प्रश्न 6. निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं को ध्यान से पढ़िए और इस प्रकार के कुछ और वाक्य बनाइए-

(क) 1. लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे।

2. उसके लिए तो बजाज की दुकान से कपड़ा लाना ही होगा।

3. चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना ही क्यों न बिक जाएँ।

(ख) 1. अरे जैसी नीयत होती है, अल्ला भी वैसी ही बरकरत देता है।

2. भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला।

## अध्याय 1- दुःख का अधिकार

- उत्तर-**(क) 1. सुबह उठते ही किसान खेत की ओर चल पड़े।  
2. इस सप्ताह तक बच्चे की फ़ीस जमा करानी ही होगी।  
3. चाहे पढ़ाई के लिए खेती-बाड़ी ही क्यों न बेचना पड़े।  
(ख) 1. अरे जैसा परिश्रम करोगे वैसे ही ग्रेड लाओगे।  
2. जयंत को जो एक बार नशे की लत लगी तो फिर आजीवन न छूटी।

### योग्यता विस्तार

**प्रश्न 1.** 'व्यक्ति की पहचान उसकी पोशाक से होती है। इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए।

**उत्तर-**छात्र स्वयं करें।

**प्रश्न 2.** यदि आपने भगवाना की माँ जैसी किसी दुखिया को देखा है तो उसकी कहानी लिखिए।

**उत्तर-**छात्र अपने आसपास की किसी महिला/पुरुष की कहानी स्वयं लिखें।

**प्रश्न 3.** पता कीजिए कि कौन-से साँप विषैले होते हैं? उनके चित्र एकत्र कीजिए और भित्ति पत्रिका में लगाइए।

**उत्तर-**छात्र इंटरनेट की मदद से स्वयं करें।

### अन्य पाठेतर हल प्रश्न

#### लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1.** खरबूजे बेचने वाली महिला पर लोग टिप्पणी क्यों कर रहे थे?

**उत्तर-** खरबूजे बेचने वाली महिला पर लोग इसलिए टिप्पणी कर रहे थे क्योंकि वे उस महिला के दुख को नहीं समझ पा रहे थे। उन्हें तो बस उस महिला की लालच दिखाई दे रही थी।

**प्रश्न 2.** बूढ़ी महिला द्वारा खरबूजे बेचे जाने को लोग घृणित कार्य क्यों समझ रहे थे? उत्तर- बूढ़ी महिला द्वारा खरबूजे बेचे जाने को लोग घृणित कार्य इसलिए समझ रहे थे क्योंकि उस महिला के घर में सूतक था।

इस सूतक में उसके हाथ से खरबूजे खरीदने और खाने से उनका धर्म भ्रष्ट हो सकता था।

**प्रश्न 3.** बुढ़िया को खरबूजे बेचते देख लोग किन-किन विशेषणों का प्रयोग कर रहे थे? उनका ऐसा कहना कितना उचित था?

**उत्तर-** बुढ़िया को खरबूजे बेचते देख लोग 'लालची', 'बेहया', 'कमीने लोग' जैसे विशेषणों का प्रयोग कर रहे थे। उनका ऐसा कहना तनिक भी उचित नहीं था, क्योंकि बुढ़िया लालच या धन कमाने के लिए खरबूजे नहीं बेच रही थी। खरबूजे बेचना उसकी मज़बूरी थी।

**प्रश्न 4.** खरबूजे बेचने आई महिला फफक-फफककर क्यों रोए जा रही थी?

**उत्तर-** खरबूजे बेचने आई महिला इसलिए फफक-फफककर रोए जा रही थी क्योंकि एक दिन पहले ही उसका जवान बेटा साँप के हँसने से चल बसा था। उसके घर में पोते-पोती और बीमार बहू के लिए कुछ भी खाने को न था। शोक मनाने की जगह खरबूजे बेचने की विवशता और बेटे के दुख के कारण वह फफक-फफक रोए जा रही थी।

**प्रश्न 5.** बुढ़िया की उस विवशता का उल्लेख कीजिए जिसके कारण उसे सूतक में भी खरबूजे बेचने आना पड़ा?

**उत्तर-** बुढ़िया के जवान बेटे को साँप ने डँस लिया था। ओझा से झाड़-फेंक करवाने और नागपूजा के बाद दान-दक्षिणा देने में घर का अनाज और आटा चला गया। उसके कफ़न के इंतजाम में साधारण जेवर भी बिक गए। भूख से बिलबिलाते पोते पोतियों और बीमार बहू की भूख शांत करने की विवशता में उसे सूतक में भी खरबूजे बेचने आना पड़ा।

**प्रश्न 6.** आज अच्छी पोशाक की आवश्यकता एवं महत्त्व क्यों बढ़ गया है?

**उत्तर-** आज अच्छी पोशाक की आवश्यकता एवं महत्त्व इसलिए बढ़ गया है, क्योंकि अच्छी पोशाक से पता चलता है कि व्यक्ति की हैसियत अच्छी है। पोशाक के कारण व्यक्ति सम्मान का पात्र समझा जाता है। पोशाक से ही कुछ लोगों के कठिन काम सरलता से बन जाते हैं।

**प्रश्न 7. बुढ़िया से खरबूजे खरीदने में लोगों को क्या डर सता रहा था?**

**उत्तर-**बुढ़िया अपने जवान बेटे की मृत्यु के दूसरे दिन ही खरबूजे बेचने बाजार में बैठी थी। उसके घर में सूतक था। यह बात लोगों को पता थी। बुढ़िया से खरबूजे खरीदने पर लोगों को यह डर सता रहा था कि उन्हें पातक लग जाएगा और उनका धर्म भ्रष्ट हो जाएगा।

**प्रश्न 8. अपने बेटे का इलाज ओझा से कराना बुढ़िया को किस तरह भारी पड़ गया?**

**उत्तर-**जवान बेटे को साँप ने डँस लिया है, उसे सुनते ही बुढ़िया बावली हो गई। वह भागकर ओझा को बुला लाई ओझा ने झाड़-फूक किया, नाग पूजा की, दान-दक्षिणा लिया किंतु उसके बेटे भगवाना की जान नहीं बच सकी। इस तरह ओझा से इलाज कराना बुढ़िया को भारी पड़ गया।

**प्रश्न 9. भगवाना के इलाज और उसकी विदाई के बाद घर की आर्थिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा?**

**उत्तर-**भगवाना के इलाज में ही घर का आटा और अनाज तक खत्म हो गया था। उसकी मृत्यु के बाद उसके लिए कफ़न के इंतजाम में छोटे-मोटे आभूषण तक बिक गए। अब उसके घर में खाने के भी लाले पड़ गए। इस तरह घर की आर्थिक स्थिति बिल्कुल खराब हो गई।

**प्रश्न 10. भगवान का मुँह अँधेरे खरबूजे तोड़ना किस तरह जानलेवा साबित हुआ?**

**उत्तर-**भगवाना अपने खेत में मुँह-अँधेरे ही पके खरबूजे तोड़ना चला गया। वहाँ गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए साँप पर उसका पैर पड़ गया जिसे वह हल्का अँधेरा होने के कारण देख न सका था। साँप के हँसने से उसकी मृत्यु हो गई। इस तरह मुँह अँधेरे खरबूजे तोड़ना उसके लिए जानलेवा सिद्ध हुआ।

**प्रश्न 11. बुढ़िया को रोते देखकर लेखक चाहकर भी क्या न कर सका?**

**उत्तर-**खरबूजे बेचने वाली बुढ़िया को रोता देखकर लेखक ने उसके दुख को महसूस किया। वह बुढ़िया के पास बैठकर अपने हृदय की अनुभूति प्रकट करना चाहता था, पर अपनी पोशाक के कारण चाहकर भी ऐसा न कर सका।

### प्रश्न 12. बुढ़िया के दुख से दुखी लेखक को किसकी याद आई?

**उत्तर-**खरबूजे बेचने आई महिला को रोती देखकर लेखक ने उसके दुख को महसूस किया। वह दुखी हो गया। बुढ़िया को शोक मनाने का भी अवसर न मिल पाया था, यह सोचकर उसे अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद आई, जो इस स्थिति में दो-ढाई महीने तक बिस्तर से भी न उठ पाई थी।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

#### प्रश्न 1. बुढ़िया के बेटे की मृत्यु से उसे ज्ञान और माल दोनों की हानि हुई। ‘दुख का अधिकार’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**बुढ़िया का तेईस वर्षीय जवान बेटा ही उसका एकमात्र कमाऊ सदस्य था। वह शहर के पास की डेढ़ बीघा भूमि पर सब्जियाँ उगाकर घर का गुजारा चलाता था। उसकी मृत्यु होने से घर में कोई कमाने वाला सदस्य न बचा। उसकी मृत्यु साँप के काटने से हुई थी। साँप के काटने का इलाज करवाने के लिए उसकी माँ ओझा को बुला लाई थी जिसने झाड़-फेंक और नाग-पूजा के नाम पर तथा दान-दक्षिणा के रूप में अमाज और आटा तक चला गया। उसके लिए कफ़न की व्यवस्था करते हुए साधारण से बचे-खुचे जेवर भी बिक गए जिससे बुढ़िया के पोते-पोती को खाने के लाले पड़ गए। इस प्रकार बुढ़िया के बेटे की मृत्यु से उसे ज्ञान और माल दोनों की हानि उठानी पड़ी।

#### प्रश्न 2. भगवाना कौन था? उसकी मृत्यु किस तरह हुई ?

**उत्तर-**भगवाना खरबूजे बेचने वाली महिला का तेईस वर्षीय बेटा था। वह अपने घर का एक मात्र कमाऊ सदस्य था जो शहर के पास डेढ़ बीघे जमीन पर सब्जियाँ उगाकर गुजारा करता था। वह मुँह अँधेरे खेत में पके तरबूजे तोड़ने गया था ताकि उन्हें इकट्ठा कर बाजार में बेच सके। खेत की गीली मेड़ की तरावट में एक साँप विश्राम कर रहा था। भगवाना उसे देख न पाया और उसका पैर साँप पर पड़ गया। साँप ने उसे डँस लिया। साँप का जहर उतारने के लिए ओझा को बुलवाया गया, पर विष के असर से उसका शरीर काला पड़ता गया और उसकी मृत्यु हो गई।

**प्रश्न 3. कभी-कभी पोशाकें मनुष्य के लिए बाधक सिद्ध होती हैं। ऐसी पोशाकों की तुलना किससे की है और क्यों ?**

**उत्तर-**मनुष्य जब अच्छी पोशाक पहनकर कहीं आ जा रहा होता है, उसी समय जब वह निम्न श्रेणी के समझे जाने वालों को दुखी देखता है तो वह उसके दुख से द्रवित होकर उसके दुख के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करना चाहता है परंतु वह अपनी अच्छी पोशाक के कारण चाहकर भी उसके पास जाकर ऐसा नहीं कर पाता है। लेखक ने ऐसी पोशाकों की तुलना । हवा में लहराती उन कटी पतंगों से की है जो हवा के झोंकों के कारण सीधी जमीन पर नहीं गिर पाती हैं। इसी तरह पोशाकें भी मनुष्य को अपनी स्थिति से नीचे जाने से रोकती हैं।

**प्रश्न 4. सूतक' क्या है? समाज में इसके प्रति क्या धारणा फैली है? 'दुख का अधिकार' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-**हिंदू परिवारों में जब किसी की मृत्यु होती है तो उस दिन से तेरह दिनों तक घर को अपवित्र माना जाता है। इन दिनों में कोई मांगलिक और शुभ समझे जाने वाले कार्य नहीं किए जाते हैं। तेरह दिनों की इस अपवित्रता की स्थिति को सूतक कहते हैं। समाज में सूतक के प्रति यह धारणा फैली है कि इस स्थिति में उस परिवार के हर सदस्य और हर वस्तु अपवित्र होती हैं। इन सदस्यों के हाथ से ली गई वस्तुएँ खाने-पीने से व्यक्ति का धर्म-ईमान नष्ट हो जाता है और वह पाप का भागीदार बनता है। ऐसे में लोग सूतक से बचने का हर संभव प्रयास करते हैं।

**प्रश्न 5. 'दुख का अधिकार' पाठ में किस सामाजिक बुराई की ओर संकेत किया गया है? इसके कारणों पर प्रकाश डालते हुए इससे होने वाली हानियों का भी उल्लेख कीजिए।**

**उत्तर-**'दुख का अधिकार' पाठ में साँप के काटने का इलाज झाड़ू-फेंक और ओझा से नाग देवता की पूजा-अर्चना कराने तथा अंत्येष्टि जैसे कार्य पर अपव्यय करने जैसी सामाजिक बुराई की ओर संकेत किया गया है। इन बुराइयों का कारण अशिक्षा, रूढ़िवादिता, धर्म का भय तथा जागरुकता का अभाव है जिसके कारण अनपढ़ और ग्रामीण लोग इन बुराइयों का सरलता से शिकार बन जाते हैं। इनमें फँसकर वे अपना धन और समय ही नहीं गँवाते बल्कि पीड़ित और अपने प्रिय व्यक्ति की जान से भी हाथ धो बैठते हैं। इसकी सबसे अधिक मार गरीब परिवारों पर पड़ती है, जिन्हें बाद में खाने के भी लाले पड़ जाते हैं।

**प्रश्न 6.** 'दुःख का अधिकार' पाठ का उद्देश्य मानवीय संवेदना जगाना है।' पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-** 'दुःख का अधिकार' पाठ में खरबूजे बेचने वाली महिला की दुखी मनोदशा का ऐसा चित्रण करता है जो किसी भी संवेदनशील मनुष्य के हृदय को झकझोर जाता है। हमारे समाज में ऐसे व्यक्ति भी हैं जो संवेदनहीनता के कारण खरबूजे बेचने वाली जैसी दुखी बेवश और शोकसंतप्त के दुःख को महसूस नहीं कर पाते हैं। उनके लिए ऐसी दुखी महिला घृणा और उपहास के पात्र नज़र आते हैं। ये लोग दुखी व्यक्ति पर कटाक्ष करने से नहीं चूकते हैं। दूसरी ओर समाज में लेखक जैसे भी लोग हैं जो दूसरों को शोकसंतप्त देखकर मन से दुखी होते हैं परंतु कर्म करने के समय उनकी पोशाक अड़े आ जाती है। इस पाठ का मुख्य उद्देश्य यही है कि वे दूसरों के दुःख की अनुभूति करें और दुखी व्यक्ति पर हँसना छोड़कर उसके साथ बैठकर उससे सच्ची सहानुभूति प्रकट करें।

### दुःख का अधिकार पाठ व्याख्या

**पाठ** – मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं। प्रायः पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्जा निश्चित करती है। वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाज़े खोल देती है, परंतु कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम ज़रा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं। उस समय यह पोशाक ही बंधन और अड़चन बन जाती है। जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

**शब्दार्थ** –

**पोशाक** – पहरावा

**विभिन्न** – अलग-अलग

**अड़चन** – बाधा

**व्याख्या** – लेखक कहता है कि मनुष्यों का पहरावा उन्हें अलग-अलग श्रेणियों में बाँट देता है। लेखक के अनुसार मनुष्यों का पहरावा ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्जा निश्चित करता है। मनुष्यों का पहरावा ही मनुष्यों के लिए समाज के अनेक बंद दरवाज़े खोल देता है परन्तु लेखक कहता है कि समाज में कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम समाज के ऊँचे वर्गों के लोग छोटे वर्गों की भावनाओं को समझना चाहते हैं परन्तु उस समय समाज में उन ऊँचे वर्ग के लोगों का पहनावा ही उनकी इस भावना में बाधा बन जाती है। लेखक उदाहरण देते हुए समझाते हैं कि जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को कभी भी अचानक भूमि पर नहीं गिरने देती, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारा पहरावा हमें हमारी भावनाओं को दर्शाने से रोक देता है।

## अध्याय 1- दुःख का अधिकार

**पाठ** – बाजार में, फुटपाथ पर कुछ खरबूजे डलिया में और कुछ ज़मीन पर बिक्री के लिए रखे जान पड़ते थे। खरबूजों के समीप एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी रो रही थी। खरबूजे बिक्री के लिए थे, परन्तु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता? खरबूजों को बेचने वाली तो कपड़े से मुँह छिपाए सिर को घुटनों पर रखे फफक-फफककर रो रही थी।

**शब्दार्थ** –

**डलिया** – टोकरी

**अधेड़** – ढलती उम्र

**फफक-फफक कर** – बिलख – बिलख कर

**व्याख्या** – लेखक अपने द्वारा अनुभव किये गए एक दृश्य का वर्णन करता हुआ कहता है कि एक दिन लेखक ने बाजार में, फुटपाथ पर कुछ खरबूजों को टोकरी में और कुछ को ज़मीन पर रखे हुए देखा, ऐसा लग रहा था कि उनको वहाँ बेचने के लिए रखा हुआ है।

खरबूजों के नज़दीक ही एक ढलती उम्र की औरत बैठी रो रही थी। लेखक कहता है कि खरबूजे तो बेचने के लिए ही रखे गए थे, परन्तु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता? क्योंकि खरबूजों को बेचने वाली औरत ने तो कपड़े में अपना मुँह छुपाया हुआ था और उसने अपने सिर को घुटनों पर रखा हुआ था और वह बुरी तरह से बिलख – बिलख कर रो रही थी।

**पाठ** – पड़ोस की दुकानों के तख्तों पर बैठे या बाजार में खड़े लोग घृणा से उसी स्त्री के संबंध में बात कर रहे थे। उस स्त्री का रोना देखकर मन में एक व्यथा-सी उठी, पर उसके रोने का कारण जानने का उपाय क्या था? फुटपाथ पर उसके समीप बैठ सकने में मेरी पोशाक ही व्यवधान बन खड़ी हो गई। एक आदमी ने घृणा से एक तरफ़ थूकते हुए कहा, “क्या ज़माना है! जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा के बैठी है।” दूसरे साहब अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कह रहे थे, “अरे जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है।”

**शब्दार्थ** –

**घृणा** – नफ़रत

**व्यथा** – दुःख

**व्यवधान** – समस्या

**बेहया** – बेशर्म

**नीयत** – इरादा

**बरकत** – लाभ

**व्याख्या** – लेखक कहता है कि उस औरत को इस तरह रोता हुआ देख कर आसपास पड़ोस की दुकानों के तख्तों पर बैठे हुए और बाजार में खड़े लोग नफ़रत से उस औरत के बारे में ही बात कर रहे थे। लेखक कहता है



## अध्याय 1- दुःख का अधिकार

कि उस औरत का रोना देखकर लेखक के मन में दुःख की अनुभूति हो रही थी, परन्तु उसके रोने का कारण जानने का उपाय लेखक को समझ नहीं आ रहा था क्योंकि फुटपाथ पर उस औरत के नज़दीक बैठ सकने में लेखक का पहरावा लेखक के लिए समस्या खड़ी कर रहा था क्योंकि लेखक ऊँचे वर्ग का था और वह औरत छोटे वर्ग की थी। लेखक कहता है कि उस औरत को इस अवस्था में देख कर एक आदमी ने नफरत से एक तरफ़ थूकते हुए कहा कि देखो क्या ज़माना है! जवान लड़के को मरे हुए अभी पूरा दिन नहीं बीता और यह बेशर्म दुकान लगा के बैठी है। वहीं खड़े दूसरे साहब अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कह रहे थे कि अरे, जैसा इरादा होता है अल्ला भी वैसा ही लाभ देता है।

**पाठ** – सामने के फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने दियासलाई की तीली से कान खुजाते हुए कहा, “अरे, इन लोगों का क्या है? ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।”

परचून की दुकान पर बैठे लाला जी ने कहा, “अरे भाई, उनके लिए मरे जिए का कोई मतलब न हो, पर दूसरे के धर्म-ईमान का तो खयाल करना चाहिए! जवान बेटे के मरने पर तेरह दिन का सूतक होता है और वह यहाँ सड़क पर बाजार में आकर खरबूजे बेचने बैठ गई है।

हज़ार आदमी आते-जाते हैं। कोई क्या जानता है कि इसके घर में सूतक है। कोई इसके खरबूजे खा ले तो उसका ईमान-धर्म कैसे रहेगा? क्या अँधेर है!”

**शब्दार्थ** –

**दियासलाई** – माचिस

**खसम** – पति

**लुगाई** – पत्नी

**परचून की दुकान** – दाल आदि की दुकान

**सूतक** – छूत

**व्याख्या** – लेखक कहता है कि सामने के फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने माचिस की तीली से कान खुजाते हुए कहा अरे, इन छोटे वर्ग के लोगों का क्या है? ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए सिर्फ रोटी ही सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है। इनके लिए बेटा-बेटी, पति-पत्नी, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

इन छोटे वर्ग के लोगों के लिए कोई भी रिश्ता रोटी नहीं है। लेखक कहता है कि दाल आदि की दुकान पर बैठे लाला जी ने उस औरत के बारे में बात करते हुए कहा कि अरे भाई, इन छोटे वर्ग के लोगों के लिए मरे जिए का कोई मतलब हो या न हो, पर दूसरे के धर्म-ईमान का तो इन लोगों को खयाल करना चाहिए।

जवान बेटे के मरने पर तेरह दिन का छूत होता है और वह यहाँ सड़क पर बाजार में आकर खरबूजे बेचने बैठ गई है। हज़ार आदमी आते-जाते हैं। किसी को क्या पता कि इसके घर में किसी की मौत हुई है और अभी सूतक है।

कोई इसके खरबूजे खा ले तो उसका ईमान-धर्म कैसे रहेगा? सब नष्ट हो जाएगा।

## अध्याय 1- दुःख का अधिकार

**पाठ** – पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता लगा-उसका तेईस बरस का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में कछियारी करके परिवार का निर्वाह करता था। खरबूजों की डलिया बाजार में पहुँचाकर कभी लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता, कभी माँ बैठ जाती। लड़का परसों सुबह मुँह-अँधेरे बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था। गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए एक साँप पर लड़के का पैर पड़ गया। साँप ने लड़के को डँस लिया।

**शब्दार्थ** –

**बरस** – साल

**कछियारी** – सब्जियाँ उगाने का काम

**निर्वाह** – पालन पोषण

**मेड़** – दो खेतों की सीमा

**विश्राम** – आराम

**व्याख्या** – जब लेखक को उस औरत के बारे में जानने की इच्छा हुई तो लेखक ने वहाँ पास-पड़ोस की दुकानों से उस औरत के बारे में पूछा और पूछने पर पता लगा कि उसका तेईस साल का एक जवान लड़का था। घर में उस औरत की बहू और पोता-पोती हैं। उस औरत का लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में सब्जियाँ उगाने का काम करके परिवार का पालन पोषण करता था। खरबूजों की टोकरी बाजार में पहुँचाकर कभी उस औरत का लड़का खुद बेचने के लिए पास बैठ जाता था, कभी वह औरत बैठ जाती थी। पास-पड़ोस की दुकान वालों से लेखक को पता चला कि लड़का परसों सुबह अँधेरे में ही बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था। खरबूजे चुनते हुए उसका पैर दो खेतों की गीली सीमा पर आराम करते हुए एक साँप पर पड़ गया। साँप ने लड़के को डँस लिया।

**पाठ** – लड़के की बुढ़िया माँ बावली होकर ओझा को बुला लाई। झाड़ना-फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा हुई। पूजा के लिए दान-दक्षिणा चाहिए। घर में जो कुछ आटा और अनाज था, दान-दक्षिणा में उठ गया। माँ, बहू और बच्चे ‘भगवाना’ से लिपट-लिपटकर रोए, पर भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला। सर्प के विष से उसका सब बदन काला पड़ गया था।

ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छत्री-ककना ही क्यों न बिक जाएँ।

**शब्दार्थ** –

**बावली**- पागलों की तरह

**ओझा** – झाड़-फूँक करने वाले

**दफे** – बार

**छत्री-ककना** – ज़ेवर

## अध्याय 1- दुःख का अधिकार

**व्याख्या** – लेखक कहता है कि जब उस औरत के लड़के को साँप ने डँसा तो उस लड़के की यह बुढ़िया माँ पागलों की तरह भाग कर झाड़-फूँक करने वाले को बुला लाई। झाड़ना-फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा भी हुई। लेखक कहता है कि पूजा के लिए दान-दक्षिणा तो चाहिए ही होती है। उस औरत के घर में जो कुछ आटा और अनाज था वह उसने दान-दक्षिणा में दे दिया। परन्तु कुछ भी नहीं हुआ क्योंकि सर्प के विष से उसका सब बदन काला पड़ गया था। माँ, बहू और बच्चे ‘भगवाना’ से लिपट-लिपटकर रोए, पर भगवाना जो एक बार चुप हुआ तो फिर न बोला। लेखक कहता है कि ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परन्तु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जा सकता है? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए उस लड़के की माँ के हाथों के ज़ेवर ही क्यों न बिक जाएँ।

**पाठ** – भगवाना परलोक चला गया। घर में जो कुछ चूनी भूसी थी सो उसे विदा करने में चली गई। बाप नहीं रहा तो क्या, लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे। दादी ने उन्हें खाने के लिए खरबूजे दे दिए लेकिन बहू को क्या देती? बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था। अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअत्री-चवत्री भी कौन उधार देता।

बुढ़िया रोते-रोते और आँखें पोंछते-पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे डलिया में समेटकर बाजार की ओर चली – और चारा भी क्या था?

**व्याख्या** – लेखक कहता है की भगवाना तो परलोक चला गया और घर में जो कुछ भी अनाज और पैसे थे वह सब उसके अन्तिम संस्कार करने में लग गए। लेखक कहता है कि बाप नहीं रहा तो क्या, लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लग गए। दादी ने उन्हें खाने के लिए खरबूजे दे दिए लेकिन बहू को क्या देती? बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था। अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअत्री-चवत्री भी कौन उधार देता। क्योंकि समाज में माना जाता है कि कमाई केवल लड़का कर सकता है और उस औरत के घर में कमाई करना वाला लड़का मर गया था तो अगर कोई उधार देने की सोचता तो यह सोच कर नहीं देता कि लौटाने वाला उस घर में कोई नहीं है। यही कारण था कि बुढ़िया रोते-रोते और आँखें पोंछते-पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे टोकरी में समेटकर बाजार की ओर बेचने के लिए आ गई। उस बेचारी औरत के पास और चारा भी क्या था?

**पाठ** – बुढ़िया खरबूजे बेचने का साहस करके आई थी, परन्तु सिर पर चादर लपेटे, सिर को घुटनों पर टिकाए हुए फफक-फफकर रो रही थी।

कल जिसका बेटा चल बसा, आज वह बाजार में सौदा बेचने चली है, हाय रे पत्थर-दिल!

उस पुत्र-वियोगिनी के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए पिछले साल अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी माता की बात सोचने लगा। वह संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु के बाद अढ़ाई मास तक पलंग से उठ न सकी थी।

उन्हें पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद पुत्र-वियोग से मूर्छा आ जाती थी और मूर्छा न आने की अवस्था में आँखों से आँसू न

## अध्याय 1- दुःख का अधिकार

रुक सकते थे। दो-दो डॉक्टर हरदम सिरहाने बैठे रहते थे। हरदम सिर पर बर्फ रखी जाती थी। शहर भर के लोगों के मन उस पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे।

**शब्दार्थ –**

**पुत्र-वियोगिनी** – पुत्र को खोने वाली

**पुत्र-वियोग** – पुत्र के बिछड़ने के दुःख

**मूर्छा** – बेहोश

**हरदम** – हमेशा

**व्याख्या** – लेखक कहता है कि बुढ़िया खरबूजे बेचने का साहस करके बाजार तो आई थी, परंतु सिर पर चादर लपेटे, सिर को घुटनों पर टिकाए हुए अपने लड़के के मरने के दुःख में बुरी तरह रो रही थी। लेखक अपने आप से ही कहता है कि कल जिसका बेटा चल बसा हो, आज वह बाजार में सौदा बेचने चली आई है, इस माँ ने किस तरह अपने दिल को पत्थर किया होगा? अपने पुत्र को खोने वाली उस माँ के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए लेखक पिछले साल उसके पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी माता की बात सोचने लगा। वह बेचारी महिला पुत्र की मृत्यु के बाद अढ़ाई मास तक पलंग से ही नहीं उठ पाई थी। उन्हें पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद पुत्र के बिछड़ने के दुःख के कारण से बेहोशी आ जाती थी और जब वह होश में होती थी तो भी उसकी आँखों से आँसू न रुक सकते थे। दो-दो डॉक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहते थे। हमेशा सिर पर बर्फ रखी जाती थी। शहर भर के लोगों के मन उसका इस तरह पुत्र की याद में दुखी रहने के कारण से दुखी हो उठता था।

**पाठ** – जब मन को सूझ का रास्ता नहीं मिलता तो बेचैनी से कदम तेज़ हो जाते हैं। उसी हालत में नाक ऊपर उठाए, राह चलतों से ठोकरें खाता मैं चला जा रहा था।

सोच रहा था – शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और... दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।

**शब्दार्थ –**

**सूझ** – समझदारी

**सहूलियत** – सुविधा

**व्याख्या** – लेखक कहता है कि जब कभी हमारे मन को समझदारी से कोई रास्ता नहीं मिलता तो बेचैनी हो जाती है जिसके कारण कदम तेज़ हो जाते हैं। लेखक भी उसी हालत में नाक ऊपर उठाए चल रहा था और अपने रास्ते में चलने वाले लोगों से ठोकरें खाता हुआ चला जा रहा था और सोच रहा था कि शोक करने और गम मनाने के लिए भी इस समाज में सुविधा चाहिए और... दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 – लेखक किसके रोने का कारण नहीं जान सका ?

- (A) बच्चे के
- (B) बुढ़िया के
- (C) दूकान वाले के
- (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(B) बुढ़िया के

प्रश्न 2 – बुढ़िया के दुःख को देख कर लेखक को किसकी याद आई ?

- (A) अपनी माँ की
- (B) गाँव की
- (C) संभ्रांत महिला की
- (D) बच्चों की

उत्तर-(C) संभ्रांत महिला की

प्रश्न 3 – समाज में मनुष्यों का अधिकार और उसका दर्जा कैसे सुनिश्चित होता है ?

- (A) रहन-सहन से
- (B) खान-पान से
- (C) पोशाक से
- (D) क, ख दोनों

उत्तर-(C) पोशाक से

प्रश्न 4 – खरबूजे बेचने वाली बुढ़िया के बेटे का क्या नाम था ?

- (A) भगवाना
- (B) भगावना
- (C) भागवाना
- (D) भागवन

उत्तर-(A) भगवाना

**प्रश्न 5 -पुत्र की मृत्यु के अगले दिन किसे बाज़ार आना पड़ा ?**

- (A) लेखक को
- (B) पड़ोसी को
- (C) बुढ़िया को
- (D) इन में से किसी को नहीं

**उत्तर-(C) बुढ़िया को**

**प्रश्न 6 – बुढ़िया को पुत्र की मृत्यु के अगले ही दिन बाज़ार क्यों आना पड़ा ?**

- (A) खरबूज़ बेचने
- (B) सब्ज़ी खरीदने
- (C) घूमने
- (D) इन में से किसी को नहीं

**उत्तर-(A) खरबूज़ बेचने**

**प्रश्न 7 – कहानी में किसके मरने पर तरह दिन का सूतक कहा गया है ?**

- (A) बच्चे के
- (B) स्त्री के
- (C) वृद्ध के
- (D) पड़ोसी के

**उत्तर-(A) बच्चे के**

**प्रश्न 8 – बुढ़िया के बच्चे की मृत्यु कैसे हुई ?**

- (A) दुर्घटना से
- (B) बिमारी से
- (C) साँप के काटने से
- (D) खेत में गिरने से

**उत्तर-(C) साँप के काटने से**

**प्रश्न 9 – कहानी में लोगों ने किसे ‘पत्थर दिल’ कहा है ?**

- (A) लेखक को
- (B) बुढ़िया को

(C) भगवाना को

(D) पड़ोसिन को

**उत्तर-(B) बुढ़िया को**

**प्रश्न 10 – कपड़े में मुँह को छिपाए सिर को घुटनों पर रखकर कौन रो रहा था ?**

(A) लेखक

(B) बुढ़िया

(C) भगवाना

(D) पड़ोसिन

**उत्तर-(B) बुढ़िया**

**प्रश्न 11 – किसकी मृत्यु के पश्चात् बुढ़िया के परिवार का पालन-पोषण करने वाला कोई नहीं था ?**

(A) लेखक की

(B) पड़ोसी की

(C) भगवाना की

(D) इनमें से कोई नहीं

**उत्तर-(C) भगवाना की**

**प्रश्न 12 – बाज़ार में लोग बुढ़िया को किस दृष्टि से देख रहे थे ?**

(A) प्रेम की

(B) घृणा की

(C) नफ़रत की

(D) ईर्ष्या की

**उत्तर-(C) नफ़रत की**

**प्रश्न 13 – साँप के काटने पर बुढ़िया किसको बुला लाई ?**

(A) डॉक्टर को

(B) पड़ोसी को

(C) ओझा को

(D) गाँव वालों को

**उत्तर-(C) ओझा को**

**प्रश्न 14 – किसके दुःख को देखकर लेखक को संभ्रांत महिला की याद आई ?**

- (A) बुढ़िया को
- (B) पड़ोसी को
- (C) दुकानवालों को
- (D) इनमे से कोई नहीं

**उत्तर-(A) बुढ़िया को**

**प्रश्न 15 – लेखक के अनुसार किसे दुःख मनाने का अधिकार नहीं है ?**

- (A) बुढ़िया को
- (B) पड़ोसी को
- (C) गरीबों को
- (D) बच्चों को

**उत्तर-(C) गरीबों को**

**प्रश्न 16 – बुढ़िया बाजार में क्या बेचने गई थी ?**

- (A) तरबूज
- (B) खरबूजे
- (C) सब्जी
- (D) खिलौने

**उत्तर-(B) खरबूजे**

**प्रश्न 17 – बुढ़िया का हाल पूछने में लेखक को किस के कारण परेशानी थी?**

- (A) पोशाक के
- (B) पड़ोसी के
- (C) दुकानदार के
- (D) बच्चों के

**उत्तर-(A) पोशाक के**

**प्रश्न 18 – लेखक के अनुसार बुढ़िया को कोई क्यों उधार नहीं देता ?**

- (A) वह गरीब थी
- (B) उसका पति नहीं था



- (C) उसके बेटे की मृत्यु हो गई थी  
(D) इनमें से कोई नहीं

**उत्तर-(C) उसके बेटे की मृत्यु हो गई थी**

**प्रश्न 19 – लोगों के अनुसार बुढ़िया को कितने दिन सूतक करना चाहिए था ?**

- (A) दस  
(B) बारह  
(C) तेईस  
(D) तेरह

**उत्तर-(D) तेरह**

**प्रश्न 20 – साँप के काटने के कारण लड़के का शरीर कैसा हो गया था?**

- (A) ठंडा  
(B) काला  
(C) सफ़ेद  
(D) कड़ा

**उत्तर-(B) काला**

## सारांश

### लेखक परिचय

लेखक – यशपाल

जन्म – 1903

### दुःख का अधिकार पाठ प्रवेश

इस पाठ में लेखक समाज में होने वाले उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के भेदभाव को दर्शा रहा है। यहाँ लेखक अपने एक अनुभव को साँझा करते हुए कहता है कि दुःख मनाने का अधिकार सभी को होता है फिर चाहे वह समाज के किसी भी वर्ग का हो।

### दुःख का अधिकार पाठ सार

- ❖ लेखक के अनुसार मनुष्यों का पहनावा ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्जा निश्चित करता है। परन्तु लेखक कहता है कि समाज में कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम समाज के ऊँचे वर्गों के लोग छोटे वर्गों की भावनाओं को समझना चाहते हैं परन्तु उस समय समाज में उन ऊँचे वर्ग के लोगों का पहनावा ही उनकी इस भावना में बाधा बन जाती है।
- ❖ लेखक अपने द्वारा अनुभव किये गए एक दृश्य का वर्णन करता हुआ कहता है कि एक दिन लेखक ने बाज़ार में, फुटपाथ पर कुछ खरबूजों को टोकरी में और कुछ को ज़मीन पर रखे हुए देखा। खरबूजों के नज़दीक ही एक ढलती उम्र की औरत बैठी रो रही थी।
- ❖ लेखक कहता है कि खरबूजे तो बेचने के लिए ही रखे गए थे, परन्तु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता? क्योंकि खरबूजों को बेचने वाली औरत ने तो कपड़े में अपना मुँह छिपाया हुआ था और उसने अपने सिर को घुटनों पर रखा हुआ था और वह बुरी तरह से बिलख – बिलख कर रो रही थी। लेखक कहता है कि उस औरत का रोना देखकर लेखक के मन में दुःख की अनुभूति हो रही थी, परन्तु उसके रोने का कारण जानने का उपाय लेखक को समझ नहीं आ रहा था क्योंकि फुटपाथ पर उस औरत के नज़दीक बैठ सकने में लेखक का पहनावा लेखक के लिए समस्या खड़ी कर रहा था क्योंकि लेखक ऊँचे वर्ग का था और वह औरत छोटे वर्ग की थी।
- ❖ लेखक कहता है कि उस औरत को इस अवस्था में देख कर एक आदमी ने नफरत से एक तरफ़ थूकते हुए कहा कि देखो क्या ज़माना है! जवान लड़के को मरे हुए अभी पूरा दिन नहीं बीता और यह बेशर्म दुकान लगा के बैठी है। वहीं खड़े दूसरे साहब अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कह रहे थे कि अरे, जैसा इरादा होता है अल्ला भी वैसा ही लाभ देता है।
- ❖ लेखक कहता है कि सामने के फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने माचिस की तीली से कान खुजाते हुए कहा अरे, इन छोटे वर्ग के लोगों का क्या है? इनके लिए सिर्फ़ रोटी ही सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है।
- ❖ इनके लिए बेटा-बेटी, पति-पत्नी, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है। इन छोटे वर्गों के लिए कोई भी रिश्ता रोटी नहीं है। जब लेखक को उस औरत के बारे में जानने की इच्छा हुई तो लेखक ने वहाँ पास-पड़ोस की दुकानों से उस औरत के बारे में पूछा और पूछने पर पता लगा कि उसका तेईस साल का एक जवान लड़का था।
- ❖ घर में उस औरत की बहू और पोता-पोती हैं। उस औरत का लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में सब्जियाँ उगाने का काम करके परिवार का पालन पोषण करता था। लड़का परसों सुबह अँधेरे में ही बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था। खरबूजे चुनते हुए उसका पैर दो खेतों की गीली सीमा पर आराम करते हुए एक साँप पर पड़ गया।

## अध्याय 1- दुःख का अधिकार

- ❖ साँप ने लड़के को डस लिया। लेखक कहता है कि जब उस औरत के लड़के को साँप ने डँसा तो उस लड़के की यह बुढ़िया माँ पागलों की तरह भाग कर झाड़-फूँक करने वाले को बुला लाई। झाड़ना-फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा भी हुई।
- ❖ लेखक कहता है कि पूजा के लिए दान-दक्षिणा तो चाहिए ही होती है। उस औरत के घर में जो कुछ आटा और अनाज था वह उसने दान-दक्षिणा में दे दिया। पर भगवाना जो एक बार चुप हुआ तो फिर न बोला। लेखक कहता है कि ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जा सकता है? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए उस लड़के की माँ के हाथों के ज़ेवर ही क्यों न बिक जाएँ।
- ❖ लेखक कहता है की भगवाना तो परलोक चला गया और घर में जो कुछ भी अनाज और पैसे थे वह सब उसके अन्तिम संस्कार करने में लग गए। लेखक कहता है कि बाप नहीं रहा तो क्या, लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लग गए। अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअत्री-चवत्री भी कौन उधार देता।
- ❖ क्योंकि समाज में माना जाता है कि कमाई केवल लड़का कर सकता है और उस औरत के घर में कमाई करना वाला लड़का मर गया था तो अगर कोई उधार देने की सोचता तो यह सोच कर नहीं देता कि लौटाने वाला उस घर में कोई नहीं है। यही कारण था कि बुढ़िया रोते-रोते और आँखें पोंछते-पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे टोकरी में समेटकर बाज़ार की ओर बेचने के लिए आ गई।
- ❖ उस बेचारी औरत के पास और चारा भी क्या था? लेखक कहता है कि बुढ़िया खरबूजे बेचने का साहस करके बाज़ार तो आई थी, परंतु सिर पर चादर लपेटे, सिर को घुटनों पर टिकाए हुए अपने लड़के के मरने के दुःख में बुरी तरह रो रही थी। लेखक अपने आप से ही कहता है कि कल जिसका बेटा चल बसा हो, आज वह बाजार में सौदा बेचने चली आई है, इस माँ ने किस तरह अपने दिल को पत्थर किया होगा?
- ❖ लेखक कहता है कि जब कभी हमारे मन को समझदारी से कोई रास्ता नहीं मिलता तो उस कारण बेचैनी हो जाती है जिसके कारण कदम तेज़ हो जाते हैं। लेखक भी उसी हालत में नाक ऊपर उठाए चल रहा था और अपने रास्ते में चलने वाले लोगों से ठोकरें खाता हुआ चला जा रहा था और सोच रहा था कि शोक करने और गम मनाने के लिए भी इस समाज में सुविधा चाहिए और... दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।